2024

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ३

अगस्त

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. फिलहाल सिर्फ ..... पर तिलक करने का व्यवहार है।
२. शरीर बनने के पश्चात जीव धीमे धीमे ..... बनाता है।
३. गुण एवं गुणवानों के प्रति..... हमें गुणवान बनाकर ही रहता है।
४. पूरन याने मिलना और ..... याने बिखरना।
५. श्री पद्मप्रभ स्वामी को ..... में केवलज्ञान प्राप्त हुआ।
६. तीन बार की जाने वाली आराधना ..... कहलाती है।
७. संसारी जीवो का जीवन ..... की सहायता के बिना अधूरा है।
८. ..... में दिन प्रतिदिन समस्त पदार्थो के वर्णादि गुणों में वृद्धि होती है।
९. ..... के साथ निंदा विकथा की प्रवृति भी सबके हृदय में स्थान नहीं दे पाती।
१०. श्री संभवनाथ प्रभु का लांछन ..... है।
११. प्रभु के गुणगान पूर्वक विधि सहित चैत्यवंदन करना वह..... ।
१२. धर्म जीव को स्वार्थ से ..... की ओर ले जाता है।
१३. शीत वस्तु का उष्ण प्रकाश वह..... है।
१४. श्री सुपार्श्व प्रभु के ..... आदि पिचानवे गणधर थे।
१५. श्लोक तथा काव्यों का अर्थ कहना वह ..... ।
१६. आत्मकल्याण के इच्छुक सब के जीवन में ..... नियमित होना चाहिए।
१७. जिसके हृदय में कठोरता है उसके चेहरे पर ..... कब्जा करती है।
१८. दस कोडाकोडी पल्योपम का एक ..... होता है।
१९. अति सूक्ष्मकाल का अविभाज्य घटक ..... है।
२०. हमने ..... में अनंत भव बिगाड दिये है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. वस्तु का संपूर्ण भाग क्या कहलाता है ?
२. हरेक क्षेत्र में बढने से पहले किसकी विचारणा करना आवश्यक है ?
३. तीसरे आरे का नाम क्या है ?
४. तोडने पर जिनके दो समान भाग न होते हों वह वनस्पतिकाय कौनसी ?
५. घंटनाद कौनसा शब्द है ?
६. कौन से प्रभु के यक्ष मातंग है ?
७. स्थिर मन से पूजा करना वह कौनसी शुद्धि है ?
८. जीव जहाँ जाता है वहाँ प्रथम क्या गहण करता है ?
९. खारा पानी पीकर मीठा जल कौन बरसाते है ?
१०. श्री अजीतनाथ प्रभु के पिता का नाम क्या था ?
११. पापभिरुता याने क्या ?
१२. हमें स्थिर रहने में कौन सहायक बनाता है ?
१३. कौनसी मुद्रा में 'जय वियराय सूत्र' बोला जाता है ?
१४. श्री पद्मप्रभ स्वामी के प्रमुख गणधर कौन थे ?
१५. कांटो के पास कठोरता है, तो गुलाब के पास क्या है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. बीयाणि २ पओसा ३) वरिसाय ४) संधि ५) नह ६) अदिरसा ७) सहावो ८) सतसक्कि ९) खंधा १०) भास
११. अवगाहो १२) मुहुत्तम्मि १३) मुत्तं १४) फासा १५) मुलग १६) थिर १७) लख्खण १८) सुहुमा १९) दीहा २०) सया

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) घर	१) आलू	६) आरा	६) समुह
२) चंद्रकांत	२) स्पर्श	७) वज्रनाभ	७) रत्नो
३) सत् का संग	३) गणधर	८) प्रभु	८) सुषम
४) नम्रता	४) सुसीमा	९) साधारण वनस्पतिकाय	९) सज्जन
५) गुरु	५) शिष्ट पुरुष	१०) काय	१०) अचिंत्य चिंतामणी

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. पर्याप्ति कितनी है ?
२. श्री सुपार्श्वप्रभु छद्मस्थ कितने मास रहे ?
३. एक मुहुर्त बराबर कितने श्वासोश्वास ?
४. अनंतकाय कितने है ?
५. जिन मंदिर की मुख्य आशातना कितनी ?
६. बुद्धि के गुण कितने ?
७. श्री अभिनंदन प्रभु की उंचाई कितने धनुष्य थी ?
८. प्रथम आरे के मनुष्य कितनी पसलीयों वाले होते है ?
९. अजीव के कुल भेद कितने है ?
१०. शलाका पुरुष कितने है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. ग्रहण याने मन से परमात्मा की बात सुनना ।
२. एकेन्द्रिय जीवों को तीन पर्याप्ति होती है ।
३. मुकुट आदि आभूषण चढाते समय सिद्ध अवस्था का चिंतन करना ।
४. पाँचवे आरे में दुःख ज्यादा.... सुख अल्प होता है ।
५. चौद स्वपनों से सूचित अभिनंदन प्रभु वैशाख सुदी आठम को जन्मे ।
६. विषय सुखो के भोग में सामने सुख दिखता है पर अंत में दुःख ही दुःख है ।
७. जिनमंदिर में पानी पीना ये प्रमाण त्रिक है ।
८. एक उत्तरायण - छः मास
९. प्रत्येक वनस्पतिकाय छोटा टुकडा बोने पर पुनः उगता है ।
१०. अयोग्य काल में घुमने की आदत हमारे शील, सदाचार को लूट सकता है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. अयोग्य कार्य करते हुए लज्जित होना है ।
२. सभी धर्मो में काल की गिनती की पध्धतियाँ बताई गई है ।
३. विवेक हीन जीवन पशु समान बन जाता है ।
४. आपका जवाब क्या होगा ?
५. "जैसा संग वैसा रंग "
६. आँख की पलक झपकनें में भी असंख्य समय बीत जाता है ।
७. तत्व को तत्व रुप जानकर संसार सागर तैर जायें ।
८. स्वयं को माली बनना पडेगा ।
९. खाने-पीने में, घूमने-फिरने में, मोज-शोख में हम पागल बने है ।
१०. इसमें धर्म का काल कितना ?

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. दुषम दुषम आरा २) पुद्गल के लक्षण, वर्ण, गंध, रस ३) श्री सुमतिनाथ प्रभु की जीवन यात्रा
४. पाँच प्रकार के अभिगम ५) मार्गानुसारी का गुण, दया

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अॅकेडमी, श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालीसगांव - ४२४ १०१. जि. जलगांव, मो. ९०२८२४२४८४
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com